

UPSC CSE 2018 MAINS PAPER A OCTOBER 06, 2018 DOGRI LANGUAGE QUESTION PAPER

DOGRI-भाषा

डोगरी

( लाज़मी )

निर्धारित समय : तीन घण्टे

अधिकतम अंक : 300

**प्रश्न-पत्र संबंधी खास हदायतां**

प्रश्न-पत्र हल करने आ पहिले मेहनतानी करिये ख'लु दिन्ती येदी हदायतें गो चंगी चाली पढ़ी लेना जा

सबे प्रश्न हल कीये जाल

इक प्रश्न/भाग दे अंक कइ गे लिख गइल गे।

प्रश्न आ उत्तर डोगरी (देवनागरी लिपि) आ दे देना लाजगी गे। लिखे लिखे केह प्रश्न सबादे होर बोई छई हदायत मेई लिख गेली हंगे।

प्रश्न आ उत्तर में अक्षर मल्लख, लिखे कुतुबी की दखी गेली होई, अक्षर मल्लख कोना जना चली जा गे। दे देकर जवाब लिखे गेई लिखे आ जना जना आ लीहवा होग ली अंक कइ जांगल।

प्रश्नोत्तर-पत्रिका मे खाला छोटो मेरे सके जे कह खाला के चरके गो छैल चोई कइ लिख जा।

DOGRI

[ Compulsory ]

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

**QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS**

**Please read each of the following instructions carefully  
before attempting questions**

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in DOGRI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.



1. खाली दिये गये बिंदुओं का कुल एक बिंदु पर लगभग 600 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए :

100

- जम्हूंगदर व न्यायपालिका की भूमिका
- ज्यामस से आत्मनिर्भरता
- भूमि-वनीकरण व भूरा की भूमिका
- भारत: अर्थव्यवस्था से उसदिन चनौदिक

2. हेतु दिये गये गद्यांश की सार करने पढ़ी ने गद्यांश के खंडों व पुच्छे में सुआले के स्पष्ट, संक्षेप से संक्षिप्त भागों व उत्तर दें।

12×5=60

दुनिया का ध्यान गांधी जी आहूती बसकी इसकी खोआ हा की जे रने जनेर-शक्ति के बगेबर आत्म-शक्ति का शर कइहेआ, लेके ते मर्णनगर्ने के मकावले अहिंस का महरा लेआ। पर सोचने आहूती गइ रह ऐ जे आहिंस का रहार उने केहसो लेगा? क्या इसकोसे जे अंग्रेजों के खलाफ हिंसा का सहार लेइवै ओह भारत की अजाद मेई करोआई मकदे हे? अं इस कगे ते मनुखों-समाज की ओह एहकड़ी शिक्षा देना चांहे हे जे मनुख अइ ठार जनेरी साधने की बरतुन करने आरहे मजबूर ऐ, एह नगर ओह डूरी धाड़ी मनुख खुआने का हकदार मेई होई सकदा। पैहली गइ अहिंसा की कन्योरे ते नि-रगस गइकहा का साधन आगदी ऐ, जिसका मतलब होदा ऐ जे मोफा अइ सादे कोल मेई होन, ता मल्लायैह पे लेरी पर हुई गइ आहिंसा की मनुखों विकास का साधन बनांदी ऐ; उसदे रूपे की निर्मल बनने का उपाड सिद्ध करदी ऐ.

एह रग ऐ जे गांधी जी की अलोआई का भारतवर्सी ब्रिटेन कइ संघर्ष करा करदे हे, सों उंदे का मो का इवै भाव हा जे अहिंसा साधन नकर ऐ, जिसका आसरा अमे इस करी लैता ऐ की अ हिंसक तरीके कइ अंग्रेजों का नामना करने की असेंती का सुविधा ऐ ते ना अस इरा जोगइ आं पर गांधी जी अपे इन विचार की मेई मकदे हे। आहिंसा की लोइवै ओह भारत की अजाद करोआने के मकदे च मेई हे। भारत की अजादी बड़ा बड़ा मकसद हा, उस कोला को बड़ा लक्ष्य मनुखों सुअनम का बदलाव लेआना हा, मनुखों की एह जकीर दुआना हा जे जिन उदेश्यों आनै ओह कन्योरे साधने का महरा लैदा ऐ, ओह लक्ष्य मनुखों-मुल्ले कइ बी हानल कीले जाई सकदे न।

गांधी जी का मूल मकसद नासिने अपने देशवासियों के कइते की मिटाना, बल्कि पाइन के जनीयुन की रोकना बी हा। नकरत, एह ने जोग, एह जानकी च की होदे न ते ओह बी अपने करोधी का समन उने शल्ले कइ करदे न। पर मनुख जनी कोला नकरत ऐ, इसकी मनासत ऐ जे ओह अपने जोश उपर काबू रखै अपने रोच बरोजी कोच दिये मुश्कले में सुलझने च उने तरीके कोला कम लै, अइहे जनी आभौ दुलभ, पर मनुखे आरहे सुलभ न। सुआल उठदा ऐ जे ऐसा निर्या की कोला? ते अहिंसा का एहकड़ा तजरबा कुसे होर मुलवै च शुरू मेई होइवै भारत च की शुरू होआ? संत सारे लोक इस सुआल की एह आखिये टाछी दिंदे न जे एह यक-लखत हाई की गइ ही। पर एह यक-लखत गइ है मेई ही। अउरि ने, सल्लायैह जे लहीमी भरोची हुकम ना-फरगानी की कल्पना अमरीका के चितक धुरो ने बी कीली ही ने इमरी इन सारी इलवा कर दे सैत साहित्यकार टालस्टाय को बी लखी चुकी की हे। गांधी जी धुरो ले टालस्टाय, दौने के बिचरे धम पांचिन हे। इत्ये अपने देश च बी गांधी जी शा बैइते, अंग्रि-द लहीमी आहूती हुकम-ना-फरगानी ने अमरयोग का मुआस मुलखा के आगे रखी चुके द हे।

इसका तजरबा मभने शा बैइले भारत में की कीत?

जवाब सफ ऐ जे आत्म शक्ति जिसकी शक्ति करत बेहतर ऐ, इन सच्चाई की जिना भारतवासी मानदे हे, उना इरा उने के लोक मेई। धुरो, टालस्टाय जे एमसेन ने रोम्या रेलों च इस काड़ी की जइ बी भावना जनी। ता अइ बिच्छे भारती दर्शन की



उम्मेदवा बल्ल बन कर रहे हैं। रतेनी आहली हुकम ना-परमानी की कल्पना तगर जाने वा दर्शक इस मुल्के च मजूर हा ते  
इस कल्पना मजूर ओहो अर्थात् आई सज्जा हा जेहड़ा कां ते भारती विचरधारा थपा उपानित होये जा अपने आप आ वाही  
की चित्त-पद्धति उपर उठी आया होये, जेहड़ी भारती पद्धति ऐसी रे। हुरो ने दाहस्याय रे सरस्वती च वाये बिकल्प मुक्तक  
रेह होइया। ही रे अविन्द, ओह से ते गी अर्थात् हे।

(3) दुभियां च आन मधी की आहली अक्की किंवा सजाया हा?

(4) अजारी दाहल करने आरले पाछी जो पासेआ अहिंस की गी की मूल साधन मनेआ गेआ?

(5) अखाने ने मनुक्ख ते जनैर च केह फर्क हमसे वा ऐ?

(6) अहिंसा वा दाहल भाग च गी के लो शुरू होआ?

(7) महीनी आहली हुकम ना-परमानी की कल्पना तगर कुंवा आई मकदा ऐ?

3. हेठ दिने के पहरे वा सार लगभग इक लेहाई मने च लिखो: मेहमानी कायै सिलेज मेई देओ सर अपनी भाश  
च लिखी :

60

अजो के आधुनिक मनुक्खी की इतिहास ते समे के निजमें-कनुने वा विजया जार ऐ, अजा खबो पहले कुमै जुगे च हासल मेई  
हा रतेह मेहने च ओह इतिहासक 'मनुक्ख' ऐ। इक बाहरी इतिहास-बोध गी आधुनिकता वा सर्वाथ मधी लेन गेआ गे।  
मनुक्खाली संस्कृति च धर्म वा जेहड़ा अंदरुनी बाहर हा, उसने मदे मदे किगड़े होइ होइ अपनी आह इतिहास की सीपी  
देगी ऐ, मनुक्ख कुदरत महील च मेई, इतिहास के संदर्भ च जीवा ऐ। इस रहस्य हर घटना बिलाली घटना थपा मधी ऐ,  
जेहड़ा हन होआ करत ऐ, ओह पहले कदे मेई होआ। माहू के मिलसनेवा 'विजय' वा एह बोध प्राणीन दानिये आपने  
अपना ते अर्थात् हा। भारती मनीशिये आसने की एह उजा है ओपरा वा। ओह समे की बिकस के रुत च मेई, 'अकरे' के  
रूपे च दिखते है। पहले 'अपना' माहू के अजा की, जेहड़ी उसकी जीवन-शैली की अनुशासना करदे हो, हन इतिहास  
मनुक्ख के भविष्य की निर्धारत करदा ऐ ते परंपरा तगालने आसने उसी पिछड़े दिखना बोदा ऐ। पर एह मज सच ऐ ने  
इतिहास वा जेहड़ा दवदवा अज साहे जीवन च ऐ ओह पहले कदे मेई हा, उथे एह मज की उनी गी सच ऐ जे मनुक्ख  
अज समे ते इतिहास थपा परंपरा ऐ, उथेई रुत च तर पासी सत्ता कजे मणोसार जेहड़ा इतिहास-बोध माहू की तरकी ते  
मुक्ति वा मदेस लेआया हा, ओह नाह समे तगर अजो-अजो अपनी गी बूर तासहानी च बदलौदा लवभा करदा ऐ। भविष्य  
की निर्धारत करने आहले निजम, कनुन, फाईले हू बी हैन, पर उंवे पर बीहमी सदी के अन्धकार ने मोहभंग वा इजा इहगा  
असर ऐ जे ओह भविष्य के बद कर्गे च कृते गेह मेई होई जाते। केसा ऐ एह विज्ञानक, तर्क भरोचा, गीतपूर्ण अर्थबोध,  
विज्ञान अज माहू गी अपने ते भविष्य के जनि इजा अरक्षित, इतिहास ते तेजवीन बनउदे छोली रिता ऐ?

ऐसा मेई ऐ जे अस मनुक्खी भविष्य के अरे च जानदे मेई। अजो के आधुनिक माहू ने इतिहास बोध थपा प्रेरित होइये  
भविष्य के जने च जे पंक्तिधन ते संभावना दुनियां च, उंवे आधार उपर सबू भविष्य की सूरी लवनी बनाई जाई  
मकदी ऐ।



पर इन परिवर्तन का वर्गीकरण १८८१ जैसे कोई संबंध नहीं, बल्कि इन्हीं आन्दोलों, वर्गीकरण के दर धर्म बचने अपने हैं इस 'इतिहासिक परिवर्तन' की पहचान देना है। अर्थात् भारत वर्ग-मुक्त समाज का सुझाव होकर न केवल विधायन 'सेवा' का संयोजन, इस कदम कोई नहीं लेई गीला। अन पसुला गर्भे च नई, इस लक्ष्य के रूप में आगे आगे अजीब गढ़ पड़ रहे हैं इस परिवर्तन का माहौल ही बेसी को देख निकलता है। बिना मंदा है की जे आगे अपनी नीति या मन्त्रालय असे परिवर्तनलोक का रूप लेई लीला है।

एह आधुनिक रूप से अजीब दिवसीलोक गरीब जग है इन पाम्सी असे का अनुकूल 'इतिहास-बोध' थमा पीड़ित है, दूर पाई मोर न अनीत से सामाजिक परिवर्तन के बिना इतिहास का जीवन धारा अपने सूखी गई है। जिस चाहूरी गरीब च दुखदा अन्दर पाले कदम संरक्ष लेई जरूरी पड़त, उससे चालू इतिहास च हूबहे का अनुकूल सने का पेट लेई जाके सकता। ओह उद्देश्य कर्म प्रभावित लेई सकता है, पर उरी अपने जीवन न सीता का गुआह लेई जमाई सकता, अर्थात् इतिहास लेहू। इस धरती इतना माहौल का गुआह लेई कमी नहीं, उरदा केरु धारण लेई जमा देर इन्हीं कारण है जे असे इतिहास-बोध आधुनिक माहौल का अनुकूलता बनिसे लेई गेला है, जिस काल ओह परिवर्तन का संरक्ष रूप लेई, वर्गीकरण थमा खलासी कराई आरने कर है। पर असे असे वर्गीकरण थमा खलासी कराई कर्मने असे।

एह वर्गीकरण के बिना धारण-विन्दु लेई है 'असे माहौल अनीत मन्त्रालय के बाउन्ड उद्देश्य च अपनी चक्री निर्धिति की समाधान जग है। जिसके एक पाम्सी के माहौल नरक्ष है दूर गरसे ओह इतिहास च मोर है। एह नियति रसते व्यक्तिगत अनीत कदम संरक्ष लेई है, पर असे कदम ओह माहौल के लक्ष्य परिवर्तन के भी रोशन करदे है, जिस च दूर मोर के नियति की चुड़ी की है।

(1927 शब्द)

#### 4. इस लिखे के माध्यम से प्रश्नोत्तरी का अनुवाद करो -

20

परदूत गुण सुचना वैज्ञानिकों का क्षेत्र है। विज्ञान के क्षेत्रों में होना करदे नहीं आविष्कारों मुख्य जगि में जिनमें नाना अज्ञानिसे रसगिधारे कदम समाधान बीना है, उं दे न सूचना तकनीक बची है। दुनिया का दुखे को दुखने च बेहोश असे असे विज्ञानिक संदर्भ कदम कदम का है, 'होई की सूचना लेई नकले आ। सूचना समाधान करने के इस सुनिता के मुख्य के बिंदु समाधान की दिने का दूरा समाधान है जे मागे दुनिया सुनीकडे अनीत सुनीत च आई लेई है। उं असे बी, 'वैश्वीकरण' से 'वैश्वीकरण' की सोच विज्ञानिक तरीकी के इस गुण च तेजी कदम स्थापित होई लाग करदी है।

असे असे दूर गुने की समाधान के अनुकूल अनीत के समाधान व्यवस्था लेई है। सूचना के लैन-लैन संदेश लेने आइने दूर मोर है। इस कदम च समाधान थमा समाधान है। असे लेहू कदम जीवन कितना मुश्किल लेहा होगा। इसका सैद्धांत समाधान नाना असे सोछा लेई है। सभी के पाम्सी परनेआ के सूचना के क्षेत्र च निज-नमै लखने होन लगे। डाक-गा, टेलीफोन, टेलीग्राफ जेगा का व्यवस्था केली गई। 'विज्ञान' लहे संदेशे सुनने लगे। जीवन च निज आइ के रसिधारे के रसिधारे ने इस भेदा के अधीन कंप्यूटर के अनीत कदम के सूचना जग च जीवन की शुभान्त होई गेई। इंटरनेट के विकास के बाद सारे कंप्यूटर आपुने चुनी के के लखाल संदेश च मोर की मती सोख लेई लेई। सूचना जग च नमै-नमै बदलाव आता करदे न के नमै आ नमी जग मागे अदभुत निती चंद है। असे माहौल अनीत कुसी की उरदा का विज्ञान पूर्ण दुनिया च चुने का अनीत कदम कदम सकता है। ओह परंपरागत असे कदम निज लेहू गुद कर सकता है। समाधान सारे पों के दफने च असे कंप्यूटर के इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है जिससे मदद कदम अनीत-आता, दूर, दूर है 'विज्ञान' बीगा। सेवा रिक्त अनीत कदम चुक कीनेका जई सकदिय न। रिश्तेदार की स्थिति की जानकारी हासिल कीने जई सकती है। मदद असे आओ-जाई की हालत का कदम लेहा जई सकता है। असे मोवाइल उपर इंटरनेट लेहू मय निज का सेवा जग कीता जई सकता है। असे दूर के समाधान के सूचना लेने का एह सभसे दूर समाधान साधन है।



5. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करो।

20

Democracy stands much superior to any other form of government in promoting dignity and freedom of the individual. Every individual wants to receive respect from fellow beings. Often, conflicts arise among individuals because some feel that they are not treated with due respect. The passion for respect and freedom are the basis of democracy. Democracies throughout the world have recognized this, at least in principle. This has been achieved in various degrees in various democracies. For societies which have been built for long on the basis of subordination and domination, it is not a simple matter to recognize that all individuals are equal.

Take the case of dignity of women. Most societies across the world were historically male dominated societies. Long struggles by women have created some sensitivity today that respect to and equal treatment of women are necessary ingredients of a democratic society. That does not mean that women are actually always treated with respect. But once the principle is recognized, it becomes easier for women to wage a struggle against what is now unacceptable legally and morally.

6. निम्नलिखित वाक्यों के अन्वय लिखें और निम्नलिखित वाक्यों को सही करें :

(a) इन वाक्यों का व्याख्यान करो :

10

- माता कोला दबलने पर रोने लगी।
- अन्ना बी कर्मी को रस्ते में कोला डरो।
- चौं का बगल में गंगे के तट।
- कलकत्ता पर गोलू के बाऊ पर धी।

(b) इन वाक्यों का अर्थ समझें और सही करें :

10

- सिंह बाढ़ना
- दो पक्षी नेई पिया
- दिड़ड़े में लुंके मन्थन
- छा-छा करते रोना

(c) खाली स्थानों में शब्दों के जोड़ें गीं इस चाली वाक्यों में भरें और सही करें :

10

- कोल — कल्ल
- मल्ल — मल्ल
- पड़ल — पड़ल
- गहल — गहल

(d) इन वाक्यों में सही-सही शब्द भरें :

10

- मुझे ने गहले बसने आहल
- पड़ल ललक का लोका लल
- मुझे ने मल्ल आहल
- बी कल्लली की लल

\*\*\*



